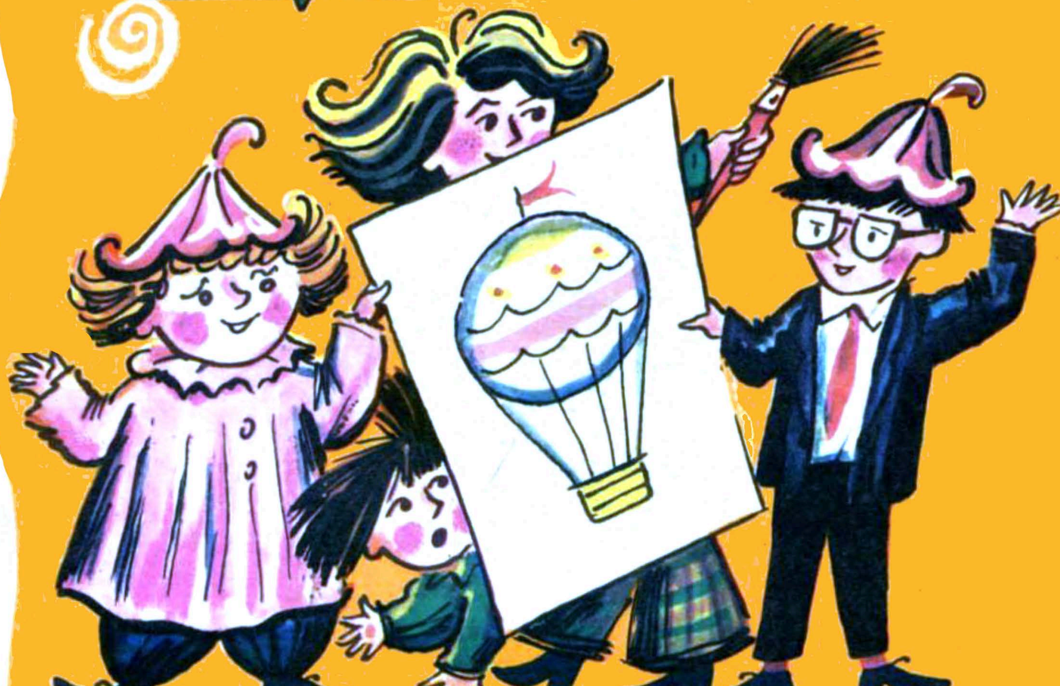
नजानू की कहानियां

६

निकोलाई नोसोव



जानू ने उड़न-
-गुब्बारा
कैसे बनाया



रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

६

जानू ने उड़न-ग़ुब्बारा कैसे बनाया

अनुवादक:
सरस्वती हैदर

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५





जानू को पढ़ने का बहुत चाव था। वह किताबों में दूर देशों और तरह-तरह की यात्राओं के बारे में पढ़ता था। अकसर जब शाम को कुछ करने को न होता तो वह अपने दोस्तों को उन बातों के बारे में बताता जिनके बारे में उसने पढ़ा था। छुटकों को ये कहानियां बहुत पसंद आती थीं। उनको उन देशों के बारे में सुनना अच्छा लगता था जहां वे कभी नहीं गये थे और सबसे अच्छा उनको लगता था यात्रियों के बारे में कहानियां सुनना क्योंकि यात्रियों के साथ अविश्वसनीय कहानियां जुड़ी होतीं और उनके अनुभव अद्‌भुत होते।

ये सब कहानियां सुनकर छुटके खुद लंबी यात्रा पर जाने के सपने देखने लगे। कुछ ने सुझाव दिया कि यात्रा पैदल की जाये। दूसरों ने कहा कि नाव में नदी की यात्रा ठीक रहेगी। मगर जानू ने कहा :

"चलो, एक गैस का गुब्बारा बनाते हैं। उस पर बैठकर हवा में उड़ेंगे।"

यह मनोरंजक सुझाव सबको भा गया। वे कभी गुब्बारे में नहीं उड़े थे और सब

छुटकों के लिए यह बहुत दिलचस्प सुझाव था। अलबत्ता, किसी को यह पता नहीं था कि गैस के गुब्बारे बनते कैसे हैं। मगर जानू बोला कि वह इसके बारे में सब कुछ सोचकर फिर सबको समझायेगा।

जानू ने सोचना शुरू कर दिया। तीन दिन और तीन रात वह सोचता रहा और इस नतीजे पर पहुंचा कि गुब्बारा रबड़ से बनाया जायेगा। छुटकों को रबड़ बनाना आता था। उनके नगर में ऐसे पौधे उगते थे जो रबड़ के पौधों से मिलते-जुलते थे। इन पौधों के तनों में कटाव बना देने पर उनमें से सफ़ेद रस निकलने लगता था। यह रस धीरे-धीरे गाढ़ा हो जाता था और रबड़ बन जाता था, जिससे गेंद और रबड़ के जूते बनाये जाते थे।

जब जानू ने रबड़ से गुब्बारा बनाने की सोची तो उसने सब छुटकों से रबड़ का रस इकट्ठा करने को कहा। सब लोग रबड़ का रस लाने लगे जिसके लिए जानू ने एक पीपा तैयार किया। नजानू भी रबड़ का रस इकट्ठा करने गया और रास्ते में उसकी भेंट अपने दोस्त चिथड़िया से हो गयी जो दो छुटकियों के साथ रस्सी कूद रहा था।





"सुनो, चिथड़िया, हम लोगों ने एक अजीब चीज़ निकाली है!" नजानू ने कहा, "भई, तुम तो मारे जलन के मर जाओगे जब तुम्हें पता चलेगा!"

"भला क्यों मरने लगा मैं," चिथड़िया ने जवाब दिया, "मैं इतनी आसानी से नहीं मरनेवाला।"

"मर जाओगे, मर जाओगे!" नजानू ने उसे विश्वास दिलाया, "भाई, चीज़ ही ऐसी है! तुमने उसे सपने में भी नहीं देखा होगा।"

"ऐसी कौन सी चीज़ है?" चिथड़िया को जानने की उत्सुकता हुई।

"बहुत जल्द हम लोग गैस का गुब्बारा बनायेंगे और उस पर उड़कर हवा में बहुत ऊपर जायेंगे।"





चिथड़िया को बड़ी जलन हुई। उसकी भी इच्छा हुई की वह भी किसी चीज़ की डींग मारे। वह बोला:

"बड़े आये गुब्बारा बनानेवाले! मैं तो छुटकियों के साथ खेलताहूं।"

"किन छुटकियों के साथ?"

"इन छुटकियों के साथ," चिथड़िया ने जवाब दिया और छुटकियों को अपनी उंगली से दिखाया। "इस छुटकी का नाम है मक्खी और इसका नाम है बटन।"

मक्खी और बटन कुछ दूरी पर खड़ी थीं और संदेह से नजानू की ओर ताक रही थीं।

नजानू ने उनकी ओर बड़े घूरकर देखा और चिथड़िया से बोला:

"अच्छा तो यह बात है! मैं समझता था तुम मेरे दोस्त हो!"

"सो तो हूं," चिथड़िया ने कहा। "और इनका भी। इसमें कोई बुराई तो नहीं है।"

"नहीं, बुराई है," नजानू ने जवाब दिया। "जो छुटकियों से दोस्ती करता है



वह खुद भी छुटकी होता है। फ़ौरन उनसे खुट्टी कर लो!"
"आखिर मैं इनसे क्यों खुट्टी कर लूं?"
"मैं जो कहता हूं–खुट्टी करो! नहीं तो मैं तुमसे खुट्टी कर लूंगा।"
"कर लो। ज़रा देखो तो इसे!"
"कर ही लूंगा, और तुम्हारी इन मक्खी और बटन की तो मैं ऐसी ख़बर लूंगा कि बस!"
नजानू मुट्ठियां तानकर छुटकियों की तरफ़ लपका। चिथड़िया ने उसका रास्ता



रोककर उसके माथे पर एक मुक्का जड़ दिया। दोनों में लड़ाई शुरू हो गयी। मक्खी और बटन डर गयीं और वहां से भाग लीं।
"तुमने उन छुटकियों की वजह से मेरे माथे पर मुक्का मारा?" नजानू चिल्लाया और उसने चिथड़िया की नाक पर मुक्का मारने की कोशिश की।
"तुम मक्खी और बटन के पीछे हाथ धोकर क्यों पड़ गये हो?" चारों तरफ़ मुक्के चलाते हुए चिथड़िया ने पूछा।
"ज़रा देखो तो, बड़ा आया बचानेवाला उनका!" नजानू ने जवाब दिया और



उसने अपने दोस्त के सर पर ऐसा भरपूर हाथ मारा कि चिथड़िया गिरते-गिरते बचा और वहां से नौ दो ग्यारह हो गया।

"मेरी तुमसे खुट्टी!" नजानू ने उसका पीछा करते हुए चिल्लाकर कहा। "अब मैं तुम्हारे साथ कभी नहीं खेलूंगा।"

"न खेलना!" चिथड़िया ने उत्तर दिया। "तुम ही पहले सुलह करने आओगे।"

"देख लेना, नहीं आऊंगा। हम तो गैस के गुब्बारे में उड़ने जा रहे हैं।"

"तुम लोग छत से ज़मीन तक ही उड़ पाओगे!"

"छत से ज़मीन तक उड़ोगे तुम!" नजानू ने जवाब दिया और रबड़ का रस इकट्ठा करने चला गया।

जब पीपा रबड़ के रस से भर गया तो जानू ने रस को खूब अच्छी तरह से चलाया और पेंचू से पम्प लाने को कहा। इस पम्प से गाड़ी के पहियों में हवा भरी जाती थी। पम्प में जानू ने एक लम्बी रबड़ की नली जोड़ दी। नली के दूसरे सिरे को उसने रबड़ के रस में डुबो दिया और पेंचू से कहा कि वह धीरे-धीरे नली में पम्प से हवा भरे। पेंचू ने हवा भरनी शुरू कर दी और तुरंत रबड़ के रस में से एक बुलबुला बनने लगा, बिल्कुल वैसे ही जैसे साबुन के पानी से साबुन के बुलबुले बनते हैं। जानू पूरे समय इस बुलबुले के चारों ओर रबड़ का रस मलता रहा। पेंचू ने हवा भरनी बन्द नहीं की जिसके फलस्वरूप बुलबुला धीरे-धीरे फूलकर एक बड़ा गुब्बारा बनने लगा। यहां तक कि अब जानू उसके चारों तरफ़ रबड़ का रस नहीं मल पा रहा था। तब उसने यह आदेश दिया कि जो छुटके कुछ नहीं कर रहे थे वे भी उस पर रस मलें। अब सब इस काम में जुट गये। सिर्फ़ नजानू गुब्बारे के चारों तरफ़ चक्कर लगाता रहा और सीटी



बजाता रहा। वह इस कोशिश में था कि वह गुब्बारे से दूर रहे। वह गुब्बारे को दूर ही से देखता और अपने आप बड़बड़ाता रहा:

"यह तो फट जायेगा! बस अभी फटता है! फटाक!"

मगर गुब्बारा नहीं फटा। हर मिनट वह और बड़ा होता जा रहा था। जल्दी ही वह इतना फूल गया कि छुटकों को गुब्बारे के ऊपर और उसके बग़ल के हिस्सों पर रबड़ का रस मलने के लिए अहाते में उगी हुई झाड़ियों पर चढ़ना पड़ा।

गुब्बारा फुलाने का काम दो दिन चलता रहा और तब समाप्त हुआ जब गुब्बारा इमारतों से भी ऊंचा हो गया। इसके बाद जानू ने गुब्बारे की नली को डोरी से बांध दिया ताकि उसमें से हवा न निकल जाये और वह बोला:

"अब गुब्बारा सूखेगा और हम सब दूसरा काम करेंगे।"

उसने गुब्बारा झाड़ी से बांध दिया ताकि गुब्बारा उड़ न जाये और इसके बाद सब छुटकों को दो टोलियों में बांट दिया। एक टोली को उसने रेशम के कोये जमा करने का आदेश दिया और उसमें से रेशम निकालने का काम सौंपा कि उससे रेशम का धागा बन सके। इस धागे से उसने एक बड़ा-सा जाल बनाने का हुक्म दिया। दूसरी टोली को जानू ने भोज-वृक्ष की पतली छाल से एक बड़ा-सा झाबा बनाने का काम दिया।



जब जानू अपने साथियों के साथ ये काम कर रहा था तो फूलनगर के सारे निवासी बड़े से गुब्बारे को देखने आये जो झाड़ी में बंधा हुआ था। हर एक गुब्बारे को हाथ से छूकर देखना चाहता था और कुछ ने तो उसे उठाने की भी कोशिश की।

"गुब्बारा तो हल्का है," वे बोले, "इसे तो बड़ी आसानी से एक हाथ से ऊपर उठाया जा सकता है।"

"है तो हल्का, मगर मेरे ख़्याल में उड़ेगा नहीं," एक छुटके ने जवाब दिया जिसका नाम दलदलिया था।

"क्यों नहीं उड़ेगा?" दूसरे लोगों ने पूछा।

"वह कैसे उड़ सकता है? अगर वह उड़ सकता तो ऊपर उठ जाता, मगर वह तो सिर्फ़ ज़मीन पर पड़ा है। इसका मतलब है कि वह हल्का तो है, मगर फिर भी भारी है," दलदलिया ने जवाब दिया।

छुटके सोच में पड़ गये।

"हूं-हूं!" वे बोले, "गुब्बारा हल्का है, मगर फिर भी भारी है। यह तो सही है। यह उड़ेगा कैसे?"

वे यही सवाल जानू से पूछने लगे, मगर जानू ने कहा:

"ज़रा धीरज रखो, जल्दी ही तुम लोग देख लोगे।"





जानू ने छुटकों को कुछ समझाया नहीं था, इसलिए वे और दुबिधा में पड़ गये। दलदलिया सारे नगर में चक्कर लगाकर ऊटपटांग अफ़वाहें फैलाने लगा।

"गुब्बारे को कौन सी शक्ति ऊपर उठायेगी?" उसने पूछा और खुद ही जवाब दिया: "ऐसी कोई शक्ति है ही नहीं! चिड़ियां उड़ सकती हैं क्योंकि उनके पंख होते हैं, मगर रबड़ का बुलबुला ऊपर नहीं उड़ सकता। वह उड़कर सिर्फ़ नीचे ही आ सकता है।"

अंत में नगर में कोई भी ऐसा आदमी नहीं रहा जिसको इस पर विश्वास रहा हो कि गुब्बारा उड़ेगा। सब मज़ाक उड़ाते और जानू के घर जाकर बाड़ पर से झांककर गुब्बारे को देखते और कहते:

"देखो, देखो! उड़ रहा है! हा-हा-हा!"

मगर जानू ने इन फब्तियों पर कोई ध्यान नहीं दिया। जब रेशम का जाल तैयार हो गया तो उसने आदेश दिया कि उसको गुब्बारे के ऊपर डाल दिया जाये। जाल गुब्बारे के ऊपर फैलाया गया और गुब्बारे का ऊपर का हिस्सा उससे ढक गया।

"देखो!" बाड़ पर खड़े हुए छुटके चिल्लाये, "इन लोगों ने गुब्बारे को जाल में पकड़ लिया है। डरते हैं कि उड़ न जाये। हा-हा-हा!"

जानू ने अपने साथियों से कहा कि गुब्बारे के खुले हिस्से को डोरी बांध दें और डोरी को झाड़ी की एक टहनी में लपेटकर खींचे जायें और गुब्बारे को ऊपर उठायें।

जल्दबाज़ और पेंचू फ़ौरन डोरी लेकर झाड़ी पर चढ़ गये और गुब्बारे को ऊपर खींचने लगे। यह देखकर तमाशबीनों को बड़ा मज़ा आया।

"हा-हा-हा!" वे लोग हंसे, "अजब गुब्बारा है जिसे डोरी बांधकर खींचना पड़ता है। यह उड़ेगा कैसे अगर इसे डोरी से ऊपर चढ़ाना पड़ता है?"

"इसी तरह उड़ेगा," दलदलिया ने जवाब दिया, "ये लोग गुब्बारे के ऊपर





बैठ जायेंगे और डोरी को पकड़कर खींचेंगे और गुब्बारा उड़ चलेगा।"

जब गुब्बारा ज़मीन से ऊपर उठा तो रेशम का बड़ा सा जाल जो उसके ऊपर पड़ा था नीचे खिसक आया। जानू ने आदेश दिया कि जाल के कोनों में भोज की छाल से बना झाबा बांध दिया जाये। झाबा चौकोर था। उसके हर कोने पर छोटी-छोटी बेंचें बनी हुई थीं। हर बेंच पर चार छुटकों के बैठने के लिए जगह थी।

जाल के चारों कोनों को झाबे में बांध दिया गया और जानू ने यह घोषणा की कि गुब्बारे को बनाने का काम पूरा हो गया है। जल्दबाज़ ने सोचा कि अब वे गुब्बारे में उड़ सकते हैं, मगर जानू ने कहा कि अभी सब के लिए पैराशूट बनाने पड़ेंगे।

"पैराशूट किस लिए?" नजानू ने पूछा।

"मान लो अचानक गुब्बारा फट जाये! ऐसे में पैराशूट के सहारे बाहर कूदना पड़ेगा।"

अगले दिन जानू और उसके साथी पैराशूट बनाने में जुट गये। हर कोई अपने लिए डैंडेलियन के रोयों से पैराशूट बना रहा था और जानू उन्हें सिखा रहा था कि पैराशूट कैसे बनाते हैं।





नगरवासियों ने देखा कि गुब्बारा बिना हिले-डुले झाड़ी पर टंगा हुआ है। उन्होंने एक दूसरे से कहा :

"यह ऐसे ही टंगे-टंगे फट जायेगा। उड़ने की नौबत ही नहीं आयेगी।"

"तुम लोग आखिर गुब्बारे में बैठकर उड़ क्यों नहीं रहे हो ?" लोग बाड़ पर से चिल्लाये, "गुब्बारा फटने से पहले उड़ जाना चाहिए।"

"परेशान मत होइये," जानू ने उनसे कहा, "उड़ान कल होगी। आठ बजे सुबह।"

बहुत से लोग इस पर हंसे, मगर कुछ लोग दुबिधा में पड़ गये।

"अगर सचमुच उड़ गये तो !" ये लोग बोले। "कल यहां आकर देखना पड़ेगा।"



Н. Носов
КАК ЗНАЙКА ПРИДУМАЛ ВОЗДУШНЫЙ ШАР
На языке хинди
N. Nosov
HOW DOONO INVENTED THE BALLOON
in Hindi



सोवियत संघ में मुद्रित





अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इन पुस्तकों में पढ़ सकते हैं :

यात्रा की तैयारी

चलो, चलें!